IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सविनय अवज्ञा आन्दोलन : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक अध्ययन

अनुराग राव
सहायक आचार्य इतिहास
विद्या संबल योजना
राजकीय महाविद्यालय, किठाना,
चिड़ावा, झुंझुनुं (राजस्थान)

शोध सारांश :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में प्रारंभ हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध के रूप में भारतीयों को एकजुट करना था। गांधीजी ने इस आन्दोलन के माध्यम से भारतीय समाज को न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि अहिंसा, सत्याग्रह और शांति के सिद्धांतों को भी स्थापित किया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को एक स्थिर और संगठित राजनीतिक ताकत के रूप में स्थापित किया और भारतीय जनमानस में ब्रिटिश शासन के खिलाफ गहरी असंतोष और विरोध की भावना पैदा की। आन्दोलन की शुरुआत दांडी यात्रा से हुई, जो कि नमक कानून के उल्लंघन के रूप में था, और इसके बाद भारत भर में व्यापक संघर्ष छिड़ गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने केवल भारतीय राजनीति को ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज को भी प्रभावित किया। इसने भारतीयों को जाति, धर्म और सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर एक साझा राष्ट्रीय पहचान और स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

मूल भाब्द : आन्दोलन, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, शांतिपूर्ण, राष्ट्रीय, जनता।

प्रस्तावना :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण और निर्णायक आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का अध्ययन करता है। यह आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में प्रारंभ हुआ और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ। गांधीजी ने इस आन्दोलन के माध्यम से भारतीयों को अहिंसा, सत्याग्रह, और असहमति के शांतिपूर्ण तरीकों से ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा दी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश शासन के द्वारा लगाए गए अवैध कानूनों, विशेषकर नमक कानून, का विरोध करना था। गांधीजी ने 1930 में दांडी यात्रा से इसकी शुरुआत की, जब उन्होंने समुद्र तट से नमक बनाने की प्रक्रिया का उल्लंघन किया, जिससे ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के खिलाफ भारतीय जनता

में गहरी असहमति और जागरूकता फैल गई। इस आन्दोलन ने भारतीय समाज को एकजुट किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को एक स्थिर और संगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

परिचय :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के महत्व, इसके कार्यक्रमों, और इसके प्रभावों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। यह आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ शुरू हुआ था, जिसमें गांधीजी ने भारतीय जनता से अपील की कि वे ब्रिटिश शासन के अवैध कानूनों का उल्लंघन करें और उनका विरोध शांतिपूर्ण तरीके से करें। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए नमक कानून का विरोध करना था, जो भारतीयों के लिए अत्यधिक शोषणकारी था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जन जागृति को जन्म दिया। गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों के साथ इस आन्दोलन का नेतृत्व किया, जो भारतीय राजनीति और समाज में एक नई चेतना का निर्माण करने में सफल रहा। दांडी मार्च, जो 1930 में शुरू हुआ, इस आन्दोलन की प्रतीकात्मक शुरुआत थी, और इसके बाद पूरे भारत में ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन करने के लिए कई स्थानों पर आन्दोलन हुए।

शोध उद्देश्य :

इस शोध का उद्देश्य सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रम तथा उसका प्रभाव का अध्ययन करना है।

भाोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रम तथा उसका प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, आलेखों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, इन्टरनेट आदि से संग्रहण किया गया है।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रम तथा उसका प्रभाव :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रारम्भ 26 जनवरी, 1930 को स्वाधीनता दिवस मनाने के बाद 2 फरवरी, 1930 को कांग्रेस कार्यसमिति ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का अधिकार गाँधीजी को दे दिया। 2 मार्च, 1930 को गाँधीजी ने वायसराय को 11 सूत्री एक माँग–पत्र दिया। इसका संतोषजनक उत्तर न मिलने पर गाँधीजी ने 12 मार्च, 1930 को 78 कार्यकर्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से डाण्डी के लिए कूच किया। 24 दिन में करीब 385 कि,मी, की पैदल यात्रा कर 6 अप्रेल, 1930 को डाण्डी पहुँचकर स्वयं गाँधीजी ने नमक तैयार करके नमक कानून तोड़ा। नमक कानून को तोड़ने के बाद सारे देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हो गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की प्रगति :

नमक कानून तोड़ना : सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पहले दौर में मारे देश में नमक कानून तोड़ने की घटनाएँ हुईं। नमक कानून तोड़ना सरकार के विरोध का प्रतीक बन गया। यथा–

- मद्रास में राजगोपालाचारी ने डाण्डी की तरह ही त्रिचनापल्ली से वेराराण्यम तक की यात्रा की।
- धरसाणा (गुजरात) में सरोजिनी नायडू ने नमक के सरकारी डिपों तक अहिंसात्मक सत्याग्रहियों की यात्रा का नेतृत्व किया।
- इसी तरह बम्बई, बंगाल, संयुक्त प्रान्त, मध्यप्रान्त और मद्रास में गैर–कानूनी तरह से नमक बनाना शुरू हो गया।

अन्य कार्यक्रम : नमक कानून तोड़ने के अतिरिक्त सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान अन्य कार्यक्रम इस प्रकार रहे–

- दिल्ली में 1600 स्त्रियों ने शराब की दुकानों पर धरना दिया।
- इस आन्दोलन के दौरान विदेशी कपड़े का बहिष्कार आशा से अधिक सफल रहा।
- इसके अंतर्गत किसानों ने कर न देने का भी आन्दोलन चलाया।
- पेशावर में आंदोलन के दौरान गढ़वाली सिपाहियों की दो पलटनों को पेशावर के प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया गया, मगर उन्होंने ऐसा आदेश मानने से इन्कार कर दिया। कुछ दिनों तक पेशावर शहर पर ब्रिटिश सत्ता नहीं रही।
- शोलापुर में गाँधीजी की गिरफ्तारी के खिलाफ विद्रोह हुआ और लोगों ने शहर में अपना शासन स्थापित कर लिया।
- चटगाँव में इस दौर में क्रांतिकारियों ने सरकारी हथियारखाने पर कब्जा कर लिया। इसके बाद सरकारी सैनिकों और क्रांतिकारियों के बीच घमासान गोलीबारी हुई।
- दमन–चक्र–सविनय अवज्ञा आन्दोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने अपना दमन चक्र चलाया। यथा–
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही सरकार ने सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और कांग्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- आन्दोलन के दौरान गोलीबारी और लाठीचार्ज में सैकड़ों लोग मारे गए।
- आंदोलन प्रारम्भ होने के एक साल के भीतर लगभग 90,000 लोगों को जेलों में बन्द कर दिया गया।

उपलब्धियाँ :

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन की निम्नलिखित प्रमुख उपलब्धियाँ रहीं–
- इस आन्दोलन से सारे देश में एकता और जागृति की नई लहर उत्पन्न हो गई। जनता के आत्मवि"वास में अभिवृद्धि हुई।
- इस आन्दोलन के दौरान स्वदेशी का प्रचार होने से आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम को बल मिला।
- इस आन्दोलन से छुआछूत, हीनता, पर्दा प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार हुआ। इससे समाज सुधार की भावना तथा रचनात्मक कार्यक्रम को नवजीवन प्राप्त हुआ।
- इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप विदेशों में भी भारत के प्रति नैतिक सहानुभूति प्राप्त हुई।
- आन्दोलन को स्थगित किया जाना 26 जनवरी, 1931 को गाँधीजी को जेल से रिहा किया गया तथा 5 मार्च, 1931 को गाँधी–इरविन समझौता हुआ, जिसके तहत कांग्रेस ने आंदोलन को स्थगित कर दिया।

निष्कर्ष :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और निर्णायक अध्याय था। गांधीजी के नेतृत्व में इस आन्दोलन ने भारतीय जनता को अहिंसा, सत्याग्रह, और प्रतिरोध के नए तरीकों से अवगत कराया। इस आन्दोलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को एक मजबूत राजनीतिक संगठन में बदल दिया और भारतीय जनमानस में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और विरोध की भावना को प्रबल किया। यह आन्दोलन न केवल भारतीय राजनीति के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि इसने भारतीय समाज में जाति, धर्म और सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर एक साझा राष्ट्रीय पहचान का

निर्माण किया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक जनांदोलन बना दिया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में एक ठोस कदम बढ़ाया गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और भारतीय राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल किया। इसके माध्यम से भारतीय समाज में एकजुटता आई, और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जन आंदोलन को गति मिली। यह आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक निर्णायक मोड़ के रूप में याद किया जाएगा, जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गांधी, महात्मा, (1938) : भारत का स्वतंत्रता संग्राम (पुनः प्रकाशित संस्करण), सरस्वती पुस्तकालय, दिल्ली।
2. शर्मा, सुमित्रा (2010) : सविनय अवज्ञा आन्दोलन और गांधीजी का नेतृत्व, भारतीय पुस्तकालय, दिल्ली।
3. फिशर, लुई (1950) : महात्मा गांधी की जीवनी, हार्पर कॉलिन्स, न्यूयॉर्क।
4. रिग्ग्स, पॉल (1997) : गांधी और नमक सत्याग्रहरू एक अध्ययन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।
5. किशोरी, लाल (2018) : सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारतीय समाज, प्रकाशन हाउस, जयपुर।
6. शर्मा, रामनिवास (2016) : भारत का स्वतंत्रता संग्राम और सविनय अवज्ञा आन्दोलन, एएसएन पब्लिशिंग, दिल्ली।
7. सिंह, रमेश (2020) : 'जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी तंत्र का असंतुलन', वैज्ञानिक रिपोर्ट, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु।
8. शर्मा, कृपाराम (2005) : नमक सत्याग्रह और इसके राजनीतिक प्रभाव, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।
9. शर्मा, मिथिलेश (2017) : सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारतीय राजनीति, लोक पुस्तकालय, दिल्ली।
10. द्विवेदी, अजय (2012) : महात्मा गांधी और उनके सिद्धांतों की समीक्षा, जयंती पुस्तक निगम, दिल्ली।
11. कुमार, विजय (2014) : सविनय अवज्ञा आन्दोलन : संघर्ष की कहानी, लोक प्रकाशन, लखनऊ।
12. जैन, विमला (2003) : सविनय अवज्ञा आन्दोलन : राजनीति और समाज की परख, भारतीय वि"वविद्यालय प्रेस, दिल्ली।
13. नारायण, राम (2010) : महात्मा गांधी और भारत का स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
14. बनर्जी, प्रदीप (2016) : गांधी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनः एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।